Acknowledgement-1

निवेदन - १

सन् १९६० ई० में बड़ौदा विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग में रिसर्च असिस्टंट के पद पर जब मैं कार्य करता था, तब विभाग की ओर से अखा की हिन्दी रचनाओं का संपादन कार्य हो रहा था। विभिन्न ग्रंथ-भंडारों से अखा की रचनाओं की खोज से लेकर उनके प्रूफ रीडिंग तक का सारा कार्य करते-करते मुझे अखा की महानता का अनुभव होने लगा था। मैंने गुजराती में उपलब्ध अखा से संबंधित प्राय: सभी आलोचनात्मक ग्रंथों का अध्ययन किया। मुझे लगा कि अखा की समस्त हिन्दी-गुजराती रचनाओं के आधार पर उनका सर्वांग पूर्ण अध्ययन कहीं भी प्रस्तुत नहीं हुआ है। यह कार्य करने की अपनी अभिलाषा मैंने तत्कालीन आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग के प्रो० कुँवर चंद्रप्रकाश जी के सन्मुख प्रकट की। उन्हों ने प्रसन्नता व्यक्त की और मुझे प्रस्तुत विषय पर कार्य करने की ओर प्रेरित किया। मैं इस सद्प्रेरणा के लिए उनका हृदय से आभारी हूँ।

अखा पर महत्त्वपूर्ण कार्य करनेवाले विद्वानों में श्री नर्मदाशंकर मेहता, पूज्य सागर महाराज, आचार्य उमाशंकर जोशी एवं कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह का नामोल्लेख अवश्य किया जायेगा। किन्तु इन सभी विद्वानों के कार्यों की अपनी - अपनी सीमायें रही हैं। श्री मेहता जी ने अखा की कतिपय गुजराती प्रबंध रचनाओं का संपादन कर कवि के दार्शनिक पक्ष पर ही विचार किया है। पू० सागर महाराज ने अखा की प्रकीर्ण गुजराती एवं हिन्दी रचनाओं का प्रकाशन कर उनकी भक्ति-भावपूर्ण संक्षिप्त भूमिकायें एवं टीकायें लिखी हैं। आचार्य उमाशंकर जोशी ने अखा के जीवन, समय एवं साहित्य पर वैज्ञानिक दृष्टि से परीक्षण एवं विवेचन किया है; किंतु यह प्रयत्न अपने आप में प्रथम प्रयत्न है एवं उसमें अखा की केवल

गुजराती रचनाओं को ही मुख्य आधार बनाया गया है। आचार्य चंद्रप्रकाशसिंह ने अखा की हिन्दी रचनाओं का संकलन कर कवि की रचनाओं के शोधपूर्ण अध्ययन का मार्ग प्रशस्त किया, इससे देश के विद्वानों का इस ओर ध्यान हुआ कि गुजरात में हिन्दी का इतना महान संत कवि हुआ है। इस प्रकार इन सभी प्रयत्नों के होते हुए भी इस क्षेत्र में विशेष अनुसंधान एवं सम्यक् अध्ययन की अपेक्षा बनी ही रही। प्रस्तुत प्रबंध इसी कार्य की पूर्ति में एक प्रयास है।

मध्यकालीन गुजरात की हिन्दी एवं गुजराती दोनों भाषाओं पर एक समान ज़बरदस्त अधिकार रखनेवाले गुजरात के इस महान संत कवि की विपुल हिन्दी रचनाओं के आलोचनात्मक अध्ययन के आज तक उपेक्षित कार्य को करने के लिये लेखक कृतसंकल्प हुआ है।

गुजरात की समस्त ज्ञानमार्गी परंपरा के पार्श्व में या अखा को केन्द्र-बिन्दु में रखकर इस धाराप्रवाह में अखा के योगदान का समुचित मूल्यांकन करने के ठोस प्रयत्न की आवश्यकता बनी रही है। वास्तव में गुजरात के प्रसिद्ध ज्ञानी कवि नरसिंह महेता - १५ वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर गुजरात के सूफी संत सागर महाराज - २० वीं सदी तक के, ५०० वर्ष के प्रभूत युगखंड की गुजरात की ज्ञान-भक्तिधारा का इतिहास अखा के माध्यम से सरलतापूर्वक परखा जा सकता है।

भूमिका में विषयप्रवेश के रूप में गुजरात की संतधारा की संक्षिप्त रूपरेखा अंकित करने के पश्चात् प्रस्तुत प्रबंध को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन की उपलब्धियाँ प्रति अध्याय इस प्रकार है- जैसा कि प्रस्तुत प्रबंध के शीर्षक के पूर्वार्ध से स्पष्ट होता है, " अखा का जीवनवृत्त " वाला प्रथम अध्याय प्रस्तुत प्रबंध का महत्त्वपूर्ण भाग है । इसमें विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध " बहि:साक्ष्य एवं अंत:साक्ष्यों " के आधार पर कवि के जीवन-वृत के विभिन्न पक्षों पर विस्तृत एवं गवेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत हुआ है । उपलब्ध नयी सामग्री में विशेषकर " हंसतीर्थ निर्वाण आश्रम, सिंध " से प्रकाशित " भजनावली " में संकलित अखा के अप्राप्य हिन्दी पद, अहमदाबाद से प्राप्त " अखा के वंशजों का प्रामाणिक वंशवृक्ष " एवं कहानवा आश्रम से प्राप्त " अखा की गुरु-शिष्य परंपरा " की स्पष्ट रूपरेखा देनेवाले पूर्ण रूप में प्राप्त मूल " अक्षय-वृक्ष " के आधार पर अखा के जीवनकाल, गुरु, पर्यटन आदि विषयों से संबंधित विभिन्न मतों का नये दृष्टिकोण से परीक्षण कर अपने निष्कर्षों की स्थापना की गई है ।

द्वितीय अध्याय में इतिहास ग्रंथों, विदेशी यात्रियों के यात्राविवरणों, जैन एवं जैनेतर कवियों की तथा अखा की समस्त रचनाओं के आधार पर प्रस्तुत युगखंड की विभिन्न परिस्थितियों पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है । इस प्रकार पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में अखा-विषयक कतिपय अध्येताओं के भ्रामक मतों का निरीक्षण करते हुए उस समस्त पृष्ठभूमि को प्रकाश में लाने का यत्न किया गया है जिससे कि अखा की रचनाओं का समुचित रीति से अनुशीलन किया जा सके ।

तृतीय अध्याय में कवि की समस्त कृतियों का कालक्रमानुसार अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही अखा की समस्त गुजराती रचनाओं का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है जो कि अखा की हिन्दी रचनाओं को समझने एवं उनके अनुशीलन में सहायक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त इसमें संत अखा की तीन रचनायें - [१] "तिथि", [२] "विष्णुपद" तथा [३] "गद्यकृति - चतु:श्लोकी भागवत" प्रथम बार प्रकाशित हुई हैं।

चतुर्थ अध्याय में कवि की समस्त हिन्दी रचनाओं का काव्य रूप, उसकी परंपरा, मौलिकता एवं अन्य विशेषताओं की दृष्टि से परिचय दिया गया है। उनमें विशेषकर कवि की "अमृतकलारमेणी" प्रथम बार विवेचित एवं प्रकाशित की गई है, इसके अतिरिक्त कुंडलिया, जकड़ियों एवं साखियों का भी प्रथम बार एवं विस्तृत अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में "कायाशोध", "घुआसा" आदि भ्रामक रचनाओं के वास्तविक रहस्य का भी उद्घाटन किया गया है। कई अप्रकाशित पद भी प्रथम बार प्रकाशित हो रहे हैं।

पंचम अध्याय में अखा के काव्य के दार्शनिक पक्ष पर समुचित प्रकाश डाला गया है। अखा द्वारा किये गये ब्रह्म, माया, जीव एवं जगत के निरूपण की परीक्षा करके यह उद्घाटित किया गया है कि अखा अजातवाद, केवलाद्वैत, शुद्धाद्वैत, सूफीवाद, आदि सभी वादों से पर केवल "स्वानुभवी" संत कवि थे।

षष्ठ अध्याय को दो विभागों में विभाजित करके उसके प्रथम विभाग में स्वानुभूति, उसकी उपलब्धि में सहायक भक्तिमार्गीय, ज्ञानमार्गीय एवं योग-

मार्गीय साधनों का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त गुरु, गुरु - गोविंद में ऐक्य, सच्चे गुरु की आवश्यकता, सहज साधना, जीवन्मुक्तदशा, ब्रह्मानुभव आदि पर अखा के विचारों का अध्ययन प्रस्तुत है। दूसरे विभाग में कवि की लोकमंगल की भावना-वर्णाश्रम के कठोर पालन की निस्सारता, विभिन्न धर्म संप्रदायों के बाह्याचार - दंभ - पाखंड आदि पर अखा के व्यंग एवं कटाक्षपूर्ण कथनों का अध्ययन प्रस्तुत है।

सप्तम अध्याय में कवि की भाषा का विशेषकर भाषावैज्ञानिक एवं व्याकरणिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह लेखक का मौलिक प्रयास है। प्रस्तुत अध्याय में अखा की हिन्दी और गुजराती कहावतों - मुहावरों का भी तुलनात्मक अध्ययन करने के साथ-साथ अखा की भाषा के शब्दसमूह का वर्गीकरण भी प्रस्तुत किया गया है। अंत में अखा की भाषा की व्यंजनाशक्ति पर उदाहरणसमेत विस्तृत विवेचन प्रस्तुत कर उनकी भाषा की काव्योपयुक्तता निर्दिष्ट की गई है।

अष्टम अध्याय में कवि की कृतियों में उपलब्ध रस, अलंकार एवं छंद पर व्यवस्थित रूप से विचार करके उनकी रचनाओं के काव्य सौंदर्य को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया गया है।

उपसंहार में संत कवि अखा के महत्त्व का निरूपण किया गया है।

प्रथम दो परिशिष्टों में संत कवि अखा की अप्रकाशित हिन्दी और गुजराती रचनाओं का संकलन किया गया है। तृतीय परिशिष्ट में "अखा-काव्य में संगीत" पर विचार किया गया है। यह लेखक का प्रथम एवं मौलिक -

प्रयास है। कवि के पदों की रागानुकूलता सूचित करने की दृष्टि से एक पद की स्वर-लिपि भी दी गई है। प्रस्तुत स्वर-लिपि कु. मधुरी खरे, (गांधी आश्रम) साबरमती, अहमदाबाद ने तैयार की है।

Acknowledgement-2

निवेदन २

प्रस्तुत अध्ययन की आधारभूत सामग्री में मैंने प्रकाशित एवं अप्रकाशित उन ग्रंथो को गृहीत किया है जिनको अन्य विद्वान आधार रूप में स्वीकार करते आये हैं। ऐसे प्रकाशित ग्रंथों में निम्नलिखित ग्रंथ प्रमुख है :

:१: अखा कृत काव्यो भा०१ : संपा० दिवानबहादुर नर्मदाशंकर देवशंकर महेता सं० १९८७ वि०

:२: अखा कृत काव्यो भा०२ : संपा० सागर महाराज, सं० १९८८ वि० अथवा अप्रसिद्ध अक्षयवाणी

:३: अखानी वाणी : प्रका० सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय, अहमदाबाद सं०२००६ वि०

:४: अखो, एक अध्ययन : ले०उमाशंकर जोशी, सन् १९४१ ई०

:५: अखाना छप्पा : संपा० उमाशंकर जोशी, सन् १९६२ ई०

:६: श्री अखा जी नी साखिओ : संपा० केशवलाल अंबालाल ठक्कर, सन १९५२ ई०

:७: अक्षय रस : संपा० कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह, सन् १९६३

अप्रकाशित ग्रंथों में निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त हस्तलिखित पोथियों की सहायता ली गई है :

:१: फार्बस गुजराती साहित्य सभा, बम्बई ।

:२: प्राच्य विद्यामंदिर [म०स०विश्व विद्यालय], बड़ौदा

:३: डाहीलक्ष्मी लायब्रेरी, नडियाद ।।

:४: गुजरात वर्नाक्यूलर सोसायटी, अहमदाबाद ।

:५: लालभाई दलीचंद, भारतीय संस्कृति विद्याभवन, अहमदाबाद ।

:६: डॉ॰योगेन्द्र त्रिपाठी [प्राध्या०गुजराती विभाग, म०स० विश्व - विद्यालय, बड़ौदा]

:७: डॉ॰मंजुलाल मजमुंदार [प्राध्या०गुजराती ~~विभाग~~, भाषा साहित्य ।, बड़ौदा]

इसके अतिरिक्त दादू महाविद्यालय, मोटी डूंगरी, जयपुर के आचार्य मंगलदेव जी के साथ अखा के गुरु संबंध में पत्रव्यवहार करने से जो महत्त्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त हुई है उनका, " हंसनिर्वाण आश्रम ", किसनगढ़ के गादिपति वेदांताचार्य श्यामानंद जी के पास से जो अतीव महत्त्वपूर्ण सामग्री एवं सूचनायें प्राप्त हुई है उनका तथा संत अखा के अध्येता श्री हरिदासभाई उदेशी, बम्बई, एवं अप्राप्य ग्रंथों के संग्राहक श्री रमणिक देशाई, बड़ौदा, के निजी ग्रंथभंडारों से जो अप्रकाशित एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हुई है उनका भी मैंने यथोचित लाभ उठाया है ।

इसके साथ-साथ प्रस्तुत विषय के मर्मज्ञ एवं अधिकारी विद्वान आचार्य उमाशंकर जोशी [उपकुलपति, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद], प्राध्या० के०का० शास्त्री [मध्यकालीन गुजराती साहित्य के नदीष्ण विद्वान], डॉ० योगेन्द्र त्रिपाठी, डॉ० मंजुलाल मजमुंदार, प्रो०डॉ०भोगीलाल सांडेसरा [अध्यक्ष गुजराती विभाग, कला संकाय, म० स० विश्व विद्यालय, बड़ौदा], प्राध्या० भूपेन्द्र त्रिवेदी [एल्फीन्स्टन कालेज, बम्बई], के साथ अनेक बार प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से एतद्विषयक चर्चा करके उनके परामर्शों से लाभ उठाया है । हिन्दी " संत साहित्य " के परम अधिकारी विद्वान आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

रचित " उत्तरी भारत की संत परंपरा " जिसे " हिन्दी संत साहित्य की एनसायक्लोपीडिया " कहा जा सकता है, उससे मुझे पद-पद पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त हिन्दी संत साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ० गोविंद त्रिगुणायत द्वारा रचित " हिन्दी निर्गुण काव्य और उसकी दार्शनिक पृष्ठ-भूमि " ग्रंथ से भी मुझे प्रेरणा मिलती रही है। मैं इन दोनों विद्वानों के सामने नतमस्तक हूँ।

जहाँ तक मेरे शोध कार्य के निर्देशन का सवाल है मुझे परमादरणीय डॉ० बिपिनबिहारी त्रिवेदी जी का सहारा न मिला होता तो मेरा हौसला अवश्यमेव पस्त हो गया होता। उन्होंने मुझे न केवल भरसक प्रोत्साहन ही दिया किन्तु मेरे प्रस्तुत कार्य का सफल निर्देशन करके इसे संपूर्ण भी करवाया। इनके प्रति अपनी कृतज्ञता मैं किन शब्दों में व्यक्त करूँ ? उनका ऋण न तो मैं इस लेखनी से ही चुका सकता हूँ और न ही किसी अन्य तरीके से।

बंधुवर डॉ०दयाशंकर शुक्ल जी ने मेरे प्रबंध का आद्यंत अवलोकन कर समय समय पर बहुमूल्य सुझाव देकर मेरे कार्य में जो सुकरता बढ़ाई है इस कारण मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। श्रद्धेय डॉ० मदनगोपाल गुप्त तथा मित्रवर डॉ० प्रतापनारायण झा के मूल्यवान परामर्शों एवं नेक सलाह से मैं लाभान्वित हुआ हूँ; और मैं दोनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। गुजरात की बहुमुखी हिन्दी काव्य-परंपरा के अधिकारी विद्वान डॉ० अंबाशंकर नागर के अमूल्य सुझावों एवं संबल के कारण अनुसंधान काल की अनेक कठिनाइयों के समय में भी मुझे मार्ग सूझता रहा है। ऐसी ही सहायता के लिए आर्ट्स और सायन्स कॉलेज, डभोई के मेरे सहयोगी प्राध्या० के० आई० पटेल, प्राध्या० एन० बी० त्रिवेदी, प्राध्या० बी० डी०पाठक तथा प्राध्या० बी०आर० मिस्त्री को भी

नहीं भूल सकता । संत कवि अखा के चित्र को सुलभ करने के कारण भारत के यशस्वी कलाकार श्री रविशंकर रावल तथा 'कुमार' ~~कार्यालय~~ के वयोवृध्द संपादक श्री बचुभाई रावत का भी मैं परम अनुगृहीत हूँ। अखा के वंशजों का पीढ़ीनामा सुलभ बनाने के कारण पू० पा० चंदुभाई, योगाश्रम, नया वाडज, अहमदाबाद, का भी मैं अंतर से आभारी हूँ ।

प्रस्तुत प्रबंध को यथासमय टाईप करके मेरे कार्य में अनुकूलता की वृद्धि करने के कारण मैं श्री मणिभाई शाह को अंत:करण से धन्यवाद देता हूँ।

इन सबके अतिरिक्त जिन जिन विद्वानों के ग्रंथों से प्रस्तुत प्रबंध-लेखन में सहायता ली गई है तथा जिन गुरुजनों, मित्रों एवं शिष्यों ने इस कार्य में मेरा उत्साह बढ़ाये रखा है उन सब के प्रति मैं हार्दिक आभार का अनुभव करता हूँ ।

निवेदक
रमणलाल पाठक